आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 12 अंक : 01 सितम्बर, 2024 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित

78वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित द्वारा उद्बोधन के अंश

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के इस पवित्र प्रांगण में विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों, कर्मचारियो, विद्यार्थियों और गणमान्य नागरिकों को भारत के 78वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। देश के स्वतंत्रता सेनानियों, अमर शहीदों और देश की आजादी के लिए बलिदान देने वाले वीरों को याद करने एवं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का आज का यह दिन है। आज ही के दिन सम्पूर्ण भारत वासियों ने परतंत्रता की बेडियों से अपने आप को आजाद करवाया एवं स्वतंत्रता के सुख का अहसास किया। आज हमें हजारों कुर्बानियों के बाद मिली आजादी को अक्षुणय रखने, देश की एकता–अखण्डता को कायम रखने, हर एक देशवासी में राष्ट्रवाद का समावेश करने एवं देश के उत्तरोतर विकास में हर संभव प्रयास करने का संकल्प लेना चाहिए। आज के दिन हमें उन सभी महान पुरूषो को नमन करना चाहिए जिनके कारण हम स्वच्छ, सुन्दर और स्वतंत्र देश में खुली हवा में सांस ले रहे हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय एक महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में तथा एक महत्वपूर्ण संस्था के रूप में अपने सारे संसाधनों के साथ अगले आने वाले वर्षो में इस तरह के नवाचार और शोध कर सके जिससे की भारतीय मेघा, भारतीय प्रतिभा, भारतीय विज्ञान फिर से दुनिया को दिखाया जा सके कि हम अपने नवाचार, तकनीकों व शोध के माध्यम से दुनिया को मार्ग–दर्शन दे सके। कोई भी ऐसा देश नहीं है कि जो भारत की विविधता को परिलक्षीत कर सकता हो। भारत की भाषाएं भारत की ताकत है। हमें अग्रेंजो ने बताया कि हमारी भाषाएं कमजोर है, क्योंकि यह भाषा उनको आती नहीं थी। बंगाल में जाओ तो बंगाली बोलनी पड़ती थी, साउथ में जाओं तो तमिल सीखनी पड़ती थी। एक भाषा से काम नहीं चल रहा था, इससे वो इतने परेशान हुए की उन्होनें कहा कि भारतीय भाषाएं पिछड़ी हुई है, इन सबको बंद करों और अग्रेंजी को सम्पर्क भाषा के रूप में चलाओं। दुर्भाग्य से हमने भी यह बाते 65–70 साल तो मानी की अग्रेंजी नही पढ़ी तो हम शिक्षित नही होगें। अब वर्ष 2020 से सरकार ने संकल्प लिया है कि हम भारत की भाषाओं की इस व्यवस्था को सम्मानित करेगें क्योंकि अपनी भाषा से ही अपनी संस्कृति को जाना जाता है। भाषा केवल संचार का माध्यम है और संचार वही अच्छा है जो लोगो तक पहुंचता है। हमें हमारी भाषा, संस्कृति, शिक्षा, ज्ञान–विज्ञान को अक्षुणय रखना होगा। देश में साम्प्रदायिक सद्भाव, विकास एवं सामाजिक समरता की मिशाल पेश करने हेतु अपने आप को दृढ़ संकल्प करना चाहिए। आजादी से पहले भारत एक सम्पन्न देश था लेकिन अंग्रेजी हुकूमत के उपरान्त हम पिछडे देशो की श्रेणी में शामिल हो गये। देश की आजादी के उपरान्त हरित क्रान्ति, श्वेत क्रान्ति, हमारे वैज्ञानिकों के प्रयासो से हमने पुनः सम्पन्नता प्राप्त की। आज भारत विश्व में कई तकनीकों एवं उत्पादन में प्रथम स्थान पर है। प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण भी हमारा ही दायित्व है। हमारे इन प्रयासों से देश सही मायनो में विकास के पथ पर अग्रसर होगा। विश्वविद्यालय के संरचनात्मक सुद्दढ़ीकरण के साथ–साथ विद्यार्थियों को सभी सुविधाएं मुहया कराने एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ने पर हमें जोर देना होगा। पशुचिकित्सा शिक्षा एवं पशु विज्ञान के क्षेत्र में नवीन शोध, आविष्कारों, ज्ञानवर्धक, कौशल तकनीक का हस्तांतरण कर हमें प्रदेश की उन्नति, कल्याण एवं अर्थव्यवस्था में अपना योगदान देना होगा। आधुनिक तकनीकों जैसे आर्टिफिशियल इन्टेलीजेस, आई.सी.टी., रोबोटिक आदि का उपयोग देश विकास में करना होगा। हम आने वाली पीढ़ी को यह बात समझाने का प्रयास करें कि जो हमें प्रकृति से मिला है, हमें वही लोगों को देना भी है। इसलिए हम उतना ही उपयोग करें जितना हम सस्टेन कर सके। अगर हम प्रकृति का दोहन करेगें तो आगे आने वाली पीढ़ी हम से यह सवाल पूछेगी। यह अधिकार प्रकृति ने हमें नही दिया है। हम भी यह अधिकार नही लें और यह संकल्प करें कि जो भार, जो भूमि, जो धरा हमें मिली है हम वही धरा को उससे भी अधिक उन्नति करके अगली पीढ़ी को सौपेगें इसी संकल्प के साथ आप सभी को इस स्वतंत्रता दिवस की अनेक शुभकामनाएं और अनेक कोटी–कोटी बधाईयां।

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

आचार्य मनोज दीक्षित ने वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति पद का कार्यभार ग्रहण किया

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति पद का अतिरिक्त कार्यभार आचार्य मनोज दीक्षित ने 11 अगस्त को ग्रहण किया। माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने राज्य सरकार की सलाह पर आदेश जारी कर महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित को अग्रिम आदेशों अथवा नियमित कुलपति की नियुक्ति होने तक, जो भी पहले हो, व्यवस्था के अंतर्गत अतिरिक्त प्रभार के रूप में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति के कार्यो का निर्वहन करने के आदेश जारी किये। आचार्य मनोज दीक्षित ने आज वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति के पद का कार्यभार ग्रहण कर लिया। निवर्तमान कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने आचार्य दीक्षित को इस अवसर पर बधाई दी। गौरतलब है कि आचार्य दीक्षित वर्तमान में महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति के रूप में कार्य कर रहे है। वेटरनरी विश्वविद्यालय की कुलसचिव बिन्दु खत्री, वित्त नियन्त्रक बी.एल. सर्वा, डीन–डॉयरेक्टर, अधिकारियों, शिक्षकों एवं प्रशासनिक कार्यालय के कर्मचारियों ने नव कुलपति को शुभकामनाएं एवं बधाई दी।

78वें स्वतंत्रता दिवस पर कुलपति ने ध्वजारोहण कर दी सलामी

स्वाधीनता दिवस के 78वें पर्व पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने ध्वजारोहण कर सलामी दी एवं सभी को स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी। इस अवसर पर कुलपति आचार्य दीक्षित ने देश के स्वतंत्रता सेनानियों, अमर शहीदों और देश की आजादी के लिए बलिदान देने वाले वीरों को याद किया एवं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। कुलपति आचार्य दीक्षित ने सभी को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज ही के दिन सम्पूर्ण भारत वासियों ने परतंत्रता की बेडियों से अपने आप को आजाद करवाया एवं स्वतंत्रता के सुख का अहसास किया। आज के दिन हमें उन सभी महान पुरूषों को नमन करना चाहिए जिनके कारण हम स्वच्छ, सुन्दर और स्वंतत्र देश में खुली हवा में सांस ले रहे हैं। कुलपति ने कहा कि उन सभी लोगो को नमन करें, महात्मा गांधी को नमन करें, सुभाषचन्द बोस को नमन करें, सरदार वल्लभ भाई पटेल को नमन करें, लाल बहादुर शास्त्री करे नमन करें, बाबा भीमराव अम्बेडकर को नमन करें जिनके समग्र प्रयासों से आज हम यह दिन देख पा रहे हैं। आज हमें हजारों कुर्बानियों के बाद मिली आजादी को अक्षुणय रखने, देश की एकता–अखण्डता को कायम रखने, हर एक देशवासी में राष्ट्रवाद का समावेश करने एवं देश के उत्तरोतर विकास में हर संभव प्रयास करने का संकल्प लेना चाहिए। इस अवसर परं विश्वविद्यालय अधिकारी, डीन–डॉयरेक्टर, शिक्षक, कर्मचारी, विद्यार्थी एवं आम जन उपस्थित रहे। स्वाधीनता दिवस के अवसर पर कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित द्वारा माननीय प्रधानमंत्री के एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत पौधारोपण किया गया। कुलपति आचार्य दीक्षित ने नीम का पौधा लगाकर पौधारोपण कार्यक्रम की शुरूआत की। पौधारोपण कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कर्मचारियों, शिक्षकों व अधिकारियों ने बड़े उत्साह में शामिल होकर पौधे रोपित किए एवं इनकी नियमित देखभाल एवं रक्षा का प्रण लिया।

आई.सी.ए.आर. महानिदेशक द्वारा विद्यार्थियों से ऑनलाईन संवाद

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं देश के कृषि एवं वेटरनरी विश्वविद्यालयो के विद्यार्थियों एवं फैकल्टी सदस्यों के साथ शनिवार, 17 अगस्त को महानिदेशक आई.सी.ए.आर. डॉ. हिमांशु पाठक ने इंटरेक्शन मीटिंग की एवं "व्यवसायिक एवं उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों हेतु रोजगार के अवसर" विषय पर व्याख्यान आयोजित किया। इस दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक शिक्षा डॉ. आर.सी. अग्रवाल, सहायक निदेशक (मानव संसाधन) डॉ. एस.के. शर्मा और सहायक निदेशक (ई.क्यू.आर.) डॉ. अमित यादव उपस्थित रहे एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित किया। व्याख्यान के दौरान विद्यार्थियों को कृषि एवं पशुपालन क्षेत्र में विभिन्न तकनीकी नवाचारों एवं उद्यमिता की सम्भावनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। महानिदेशक डॉ. हिमांशु पाठक ने राजुवास के विद्यार्थियों से भी ऑनलाईन संवाद किया एवं उनकी शंकाओं का समाधान किया।

कुलपति ने विश्वविद्यालय की योजनाओं एवं बजट की ली समीक्षा बैठक

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित की अध्यक्षता में राज्य सरकार द्वारा आवंटित बजट एवं योजनाओं की समीक्षा बैठक 17 अगस्त को आयोजित की गई। विश्वविद्यालय के वित्त नियन्त्रक बी.एल. सर्वा ने विभिन्न इकाइयों को आवंटित एवं व्यय बजट का विवरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के डीन–डॉयरेक्टर से नवीन बजट प्रस्तावों की मांग एवं आवंटित बजट के समुचित उपयोग हेतु निर्देश दिये गये। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी डीन–डॉयरेक्टर उपस्थित रहे।

गिद्धो एवं वन्य जीव संरक्षण पर जटायु कार्यशाला का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के वन्य जीव प्रबन्धन एवं स्वास्थ्य केन्द्र तथा बोम्बे नेचुरल हीस्ट्री सोसाईटी के संयुक्त तत्वावधान में "रेगिस्तान में गिद्धो एवं अन्य वन्य जीवो के प्रति संवेदीकरण एवं संरक्षण" हेतु दो दिवसीय कार्यशाला को उद्घाटन 23 अगस्त को किया गया। निदेशक बोम्बे नेचुरल हीस्ट्री सोसाईटी किशोर रिथे कार्यशाला के मुख्य अतिथि तथा संदीप चालानी उप संरक्षण वन एवं वन्यजीव, बीकानेर तथा डॉ. एस.पी. जोशी, संयुक्त निदेशक पशुपालन विभाग, बीकानेर विशेष अतिथि रहे। अधिष्ठाता प्रो. ए.पी. सिंह ने स्वागत भाषण दिया एवं कार्यशाला के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रति कुलपति प्रो. हेमन्त दाधीच ने वन्य जीवो एवं गिद्धों के प्रति आमजन में इनके संरक्षण के प्रति संवेदना उत्पन्न करने की आवश्यकता जताई तथा गिद्धो का प्राकृतिक संतुलन में महत्व को बताया। मुख्य अतिथि किशोर रिथे ने देश के विभिन्न राज्यो में उनकी संस्थान द्वारा वन्य जीव संरक्षण के कार्यों की जानकारी दी एवं विश्वविद्यालयों के माध्यम से वन्य जीव संरक्षण विषय पर लघु पाठ्यक्रमों को शुरू करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। संदीप चालानी ने जोड़बीड क्षेत्र में गिद्ध संरक्षण हेतु उनकी संस्थान द्वारा कार्यों का प्रजेटेशन किया तथा पशुचिकित्सकों की वन्यजीव संरक्षण में भूमिका पर अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यशाला के समन्वयक डॉ. साकार पालेचा ने बताया कि दो दिनों की कार्यशाला के दौरान विभिन्न वक्ताओं द्वारा वन्य जीवों के स्वास्थ्य, खान–पान, रखरखाव, इनको विस्थापित करने एवं संरक्षण करने के तरीकों, वन्य जीव पुनर्वास आदि विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किये गये। कार्यशाला में राजस्थान के साथ–साथ अन्य राज्यों के कुल 125 प्रतिभागी ने भाग लिया। डॉ. सुजीत नारवाडे (बी.एन.एच.एस.) ने धन्यवाद ज्ञापित किया। उद्घाटन सत्र में विश्वविद्यालय के डीन–डॉयरेक्टर, शिक्षक एवं विद्यार्थियों के साथ–साथ डॉ. श्रवण सिंह राठौड़, डॉ. कजवीन उमरीगर, हेमन्त वाजपयी, सचिन रानाडे, डॉ. अनिल कुमार छंगाणी, जीतु सोलंकी आदि वन्यजीव संरक्षण से जुडे विशेषज्ञ उपस्थित रहे।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी

गाढ़वाला में कम्प्यूटर साक्षरता कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गांव गाढ़वाला में 30 अगस्त को आयोजित कम्प्यूटर साक्षरता कार्यक्रम में निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय में स्कूली विद्यार्थियों को कम्प्यूटर की आधारभूत जानकारी प्रदान करने के साथ साथ कम्प्यूटर की विभिन्न क्षेत्रों में उपयोगिता एवं महत्व को विस्तृत रूप से बताया तथा कम्प्यूटर का प्रायोगिक ज्ञान प्रदान किया। डॉ. संजय सिंह ने विद्यार्थियों को कम्प्यूटर साक्षरता की जानकारी प्रदान की। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री ताराचन्द रेपस्वाल व अन्य शिक्षक कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) द्वारा 27, 28 एवं 29 अगस्त को गांव झोथडा, घणाऊ एवं नीमा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 78 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 8, 17, 21 एवं 22 अगस्त को गांव सरदारपुरा जीवन,जोगीवाला, सिलवानी एवं अमरपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 123 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 3, 17 एवं 17 अगस्त को गांव नाहरोली, ततामर एवं कूम्हा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 59 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 6, 12, 16, 21 एवं 28 अगस्त को गांव माजीपुरा, बरैठा, देवगढ़, टाडा का पुरा एवं धरमपुरा गांवों में तथा दिनांक 22 एवं 29 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 227 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 17, 22 एवं 29 अगस्त को गांव उदाना, नकोदेसर एवं नाथवाना गांवों में तथा दिनांक 16 अगस्त को केन्द्र परिसर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 112 .पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 6, 13, 22 एवं 28 अगस्त को गांव पाडीव, ओडा, मामावली एवं राजपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 116 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) द्वारा 5, 6, 8, 20 एवं 27 अगस्त को गांव सिंघाना, गुनपालिया, बेड, दुजार एवं बलदु गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 99 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 5, 8, 16, 23 एवं 28 अगस्त को गांव रंगपुर, नोटाना, बालापुरा, अभयपुरा एवं दीपपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 126 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 13, 22, 29 एवं 30 अगस्त को गांव चौसला, चैनपुरा, कलमंडा और राजपुरा गांवों में तथा दिनांक 3 एवं 14 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 141 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 13, 16, 20, 22 एवं 24 अगस्त को गांव देवरक, खाखरी वाली, बिलडी, रामगढ़ एवं उन्दडिया फलां गांवों में तथा दिनांक 6, 7 एवं 8 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 221 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 28, 30 एवं 31 अगस्त को गांव डिगाल, हेतमसर एवं नूआं गांवों में तथा 27 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 83 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 6 अगस्त को गांव उजलवास एवं 6–7, 13–16, 20–24 एवं 27–31 अगस्त को केन्द्र परिसर में पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 136 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

पशुओं के वर्षाकालीन संक्रामक रोगों की रोकथाम

पशुपालकों को पशु स्वास्थ्य से संबंधित जानकारियां न होने के कारण उन्हें अधिकांशतः बड़े पैमाने पर नुकसान उठाना पड़ता है। देश में पशु चिकित्सा सेवाओं की समुचित व्यवस्था के अभाव के अलावा जागरूकता नहीं होने से भी यह स्थिति बन जाती है। बरसात के दिनों मे पशुओ मे विभिन्न प्रकार के जीवाणु, विषाणु, आंतरिक व बाह्य परजीवी रोगों से ग्रसित हो जाते है जिससे पशु की कार्य क्षमता ओर उत्पादन क्षमता प्रभावित होती है। बचाव व उपचार के अभाव मे पशु की मृत्यु भी हो जाती है। बरसात के दिनों में पशओं में होने वाले सामान्य रोगों के लक्षण एवं उनसे बचाव के तौर–तरीके निम्न प्रकार है

खुरपका–मुंहपका रोगः– यह एक विषाणुजनित रोग है, जो फटे खुर वाले पशुओं को ग्रसित करता है। इसकी चपेट में सामान्यतः गौपशु, भैंस, भेड़, बकरी एवं सूअर आते हैं। यह छूत का रोग है।

लक्षण :– प्रभावित होने वाले पशुओं में पैर पटकना, खुर में सूजन, लंगड़ाना, अल्प अवधि का बुखार, खुर में घाव होना एवं घावों में कीड़ा लग जाना, कभी–कभी खुर का पैर से अलग हो जाना, मुंह से लार गिरना जैसे लक्षण पाए जाते हैं। जीभ, मसूड़े ओष्ठ आदि पर छाले पड जाते हैं। ये बाद में फूटकर मिल जाते हैं। इसके अलावा मादा पशुओं की प्रजनन क्षमता और बैलों की कार्य क्षमता में कमी भी आती है। बछड़ों में यह रोग घातक रूप ले लेता है, जिससे उनकी अकाल मृत्यु हो जाती है। प्रभावित पशु स्वस्थ होने के उपरान्त भी महीनों हांफते रहते हैं। शरीर के रोयें, खुर बहुत बढ़ जाते हैं। गर्भवर्भ मादा पशुओं में गर्भपात की आशंका बनी रहती है।

उपचार/सावधानी :– रोगग्रस्त पशु के पैर को नीम का कढ़ा बना कर दिन में दो से तीन बार धोना चाहिए। प्रभावित पैरों को फिनाइलयुक्युत पानी से दिन में 2–3 बार धोकर मक्खी को दूर रखने वाली मलहम का प्रयोग करना चाहिए। रोगी पशु के मुंह और खुर को लाल दवा {1 ग्राम लाल दवा को 1 लीटर पानी } अथवा फिटकरी के घोल {10 ग्राम फटकरी को 1 लीटर पानी में} से 3–4 बार धोना चाहिए। पशु के मुंह में दिन में 2–3 बार बोरोग्लिसरिन का लेप अवश्य करना चाहिए। खाने के लिए चावल का मांड, दलिया, गुड़ के साथ देना चाहिए। बारीक कुट्टी एवं अन्य चारा भी दिया जा सकता है। एंटीबायोटिक दवाओं का प्रयोग रोग के प्रभाव को कुछ हद तक कम कर देता है।

गलघोंटू रोगः– यह रोग हिमोरेजिक सेप्टीसिमिया के नाम से जाना जाता है। यह पास्चुरेचुरेला मल्टीसिडा नामक जीवाणु से होता है। यह रोग पशुओं में बरसात में होता है तथा भैंसों में इस रोग का प्रकोप अधिक होता है।

लक्षण :– अति तीव्र ज्वर के साथ प्रारंभ होने वाला जीवाणुजनित यह आम पशु रोग है, जो महामारी के रूप में फैलता है। किसी भी उम्र के पशु किसी भी मौसम में इससे ग्रस्त हो सकते हैं। एकाएक सुस्ती, भूख तथा जुगाली बंद, तीव्र ज्वर {106–108 फारॅनेहाइट}, तेज परन्तु धीमी सांस, मुंह से लार टपकना, आंख तथा अन्य श्लेष्मा झिल्लियों में लालीपन, सिर तथा गर्दन में दर्दयुक्त सूजन , जीभ बाहर निकालकर सांस लेना, सांस में घरघराहट, बेचैनी तथा अंत में मृत्यु इस रोग के मुख्य लक्षण हैं।

उपचार/सावधानी :– रोग शुरुआती दौर में तीव्रता तथा पशु की स्थिति के अनुसार उचित एंटीबायोटिक्स के द्वारा इलाज किए जाने पर संतोषजनक परिणाम मिलते हैं। धुआंधुआं करने की आम परिपाटी को रोकना चाहिए। इससे सांस लेने में कठिनाई बढ़ जाती है। गर्म बालू अथवा अन्य धुंआ रहित सामग्री की पोटली बनाकर सूजन वाले भाग पर सेंकना चाहिए। पशु को ज्यादा छेड़छाड़ से बचाना चाहिए। पशुशाला को साफ रखें। समय पर टीका लगवाएं। रोग से ग्रसित पशुओं को अलग रखें। 6 माह के ऊपर की आयु के सभी पशुओं में टीका लगवाना चाहिए। वर्षा ऋतु से पहले प्रति वर्ष यह टीका लगवा लेना चाहिए। यह छूत का रोग है। रोगी पशुओं को तुरंत स्वस्थ पशुओं से अलग कर दें। उन्हें अलग से पानी व चारा देना चाहिए। मृत पशु को गहरा गड्ढा खोदकर गाड़ दें।

थनैला रोगः– थनैला रोग, पशुओं के थन के रोग को कहते हैं। यह रोग सामान्यतः गाय, भैंस, बकरी एवं सूअर समेत तकरीबन सभी ऐसे पशुओं में पाया जाता है, जो अपने बच्चों को दूध पिलाते थनैला रोग पशुओं में कई प्रकार कीटाणु, विषाणु, फफूंद एवं यीस्ट तथा मोल्ड के संक्रमण से होता है। इसके अलावा चोट तथा मौसमी प्रतिकुलताओं के कारण भी थनैला हो जाता है।

लक्षण :–थनैला रोग से प्रभावित पशुओं में रोग के प्रारंभ में थन गर्म हो जाता है तथा उसमें दर्द एवं सूजन हो जाती है। शारीरिक तापमान भी बढ़ जाता है। लक्षण प्रकट होते ही दूध की गुणवत्ता प्रभावित होती है। दूध में छटका, खून व पस की अधिकता हो जाती हैं। पशु अरुचि से ग्रसित हो जाता है। कभी–कभी रोग के लक्षण प्रकट नहीं होते हैं। कैलिफोर्निया मेसटाइटीस सोल्यशयून के माध्यम से रोग की जांच की जाती है। संदेह की स्थिति में दूध कल्चर एवं सेंसिसेंसिटिविटी जांच की जा सकती है।

रोकथाम/बचाव :– थनैला रोग की रोकथाम के लिए दुधारू पशुओं के रहने के स्थान की नियमित सफाई जरूरी है। फिनाइल के घोल तथा अमोनिया कम्पाउंड का छिड़काव करना चाहिए। दूध दुहने के पश्चात थन की यथोचित सफाई के लिए लाल पोटाश या सेवलोन का प्रयोग किया जा सकता है। दुधारू पशुओ में दूध बन्द होने की स्थिति में ड्राई थेरेपी द्वारा उचित इलाज कराया जाना चाहिए। थनैला होने पर तुरंत पशुचिकित्सक की सलाह से उचित ईलाज कराया जाये। दूध की दुहाई निश्चित अंतराल पर की जाये। इसके अलावा पशुओं का उचित रखरखाव और थन की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली औषधियो का प्रयोग करना श्रेयस्कर है।

लंगड़िया बुखार :– यह रोग क्लास्ट्रीडियम चौउवई नामक जीवाणु के कारण होता है। इसका प्रकोप बरसात के समय अधिक होता है। यह विशेषकर छोटी आयु, दो वर्ष से कम उम्र के पशुओं में होता है।

लक्षण :– हल्का ज्वर {105 फारॅनहाइट} तथा मांसल भाग का दर्दयुक्त सूजन व लंगड़ापन प्रमुख लक्षण हैं। प्रौढ़ तथा स्वस्थ पशु ज्यादा प्रभावित होते हैं। इस भाग को दबाने पर कुचकुचाहट की आवाज होती है, मानो पुराने कागज को हथेलियों के बीच कुचला जा रहा हो।

उपचार :– पेनिसिलीन, सल्फोनामाइड, ट्रेटासाइक्लीन ग्रुप के एंटीबायोटिक्स का सपोर्टिव औषधि के साथ उपयोग, रोग की तीव्रता तथा पशु की स्थिति के अनुसार लाभकारी है। सूजन वाले भाग में चीरा लगाकर 2 प्रतिशत हाइड्रोजन पेरोक्साइड तथा पोटेशियम परैंनेट से ड्रेसिंड्रेग किया जाना लाभकारी है। पशुशाला को साफ रखें समय पर टीका लगवायें रोग से ग्रसित पशुओं को अलग रखे।

बाह्य परजीवी :– बरसात के दिनों मे बाह्य परजीवी मुख्यतया किलनियों, जूं, मक्खियों व माइट का प्रकोप बढ़ जाता है। ये बाह्य परजीवी पशुओ मे कई प्रकार के रोग कर देते हैं।

लक्षण :– ये पशु का खून चूसते हैं जिससे खून की कमी व अन्य रोगों के हो जाने के कारण पशु उत्पादकता पर कुप्रभाव पड़ता है। बाह्य परजीवियों से ग्रसित पशु की खाल की कीमत भी बाजार में कम मिलती है। कभी–कभी पशु के शरीर पर घाव भी हो जाते हैं, जिनमें मक्खियां अंडे दे देती हैं और कीड़े पड़ जाते हैं। घाव कई दिनों तक ठीक न हो पाने के कारण पशु के उपचार पर खर्च ज्यादा होता है और उत्पादकता भी प्रभावित होती है।

उपचार/सावधानी :– इन परजीवियों से बचाव के लिए वर्ष में कम से कम दो बार परजीवीनाशक दवाओं जैसे– साइपरमैथ्रिमैन, डेल्डेटामैथ्रिन आदि से पशुओं को नहलाना चाहिए। साइपरमैथ्रिमैन या डेल्टामैथ्रिमैन के 0.1 से 0.4 प्रतिशत अर्थात एक लीटर पानी में 1 से 4 मिलीलीटर दवा मिलाकर घोल बना लें। इस घोल से पशु को नहलाना चाहिए। नहलाने से पूर्व पशुओं को पानी अवश्य पिला लेना चाहिए। वर्षा ऋतु से पहले एवं बाद में दो बार इन परजीवीनाशक दवाओं का प्रयोग अत्यन्त प्रभावी होता है। ये दवायें जहरीली होती हैं अतः इनका उपयोग सतर्कता व सावधानी से करना चाहिए। पशुशाला की प्रत्येक दिन सफाई करें और उसकी सतह पर चूने का छिड़काव करें। पुरानी बिछावन यदि हो तो उसे बदलते रहें। प्रभावित पशु को साफ एवं हवादार स्थान पर अन्य स्वस्थ पशुओं से दूर रखना चाहिए। प्रभावित पशु के मुंह से गिरने वाली लार एवं पैर के घाव के संपर्क में आने वाली वस्तुओं, पुआल, भूसा, घास आदि को जला देना चाहिए या जमीन में गड्ढा खोदकर चूने के साथ गाड़ दिया जाना चाहिए। इलाज से बेहतर है इसके बाद छः माह के अंतराल पर टीकाकरण करवाते रहना चाहिए।

डॉ. प्रियंका कड़ेला
पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया

मंकीपॉक्स को जाने व समझे

विश्व के कई देशों में मंकीपॉक्स के तेजी से फैलने के कारण कई जगह इसका अलर्ट जारी किया गया है और उसे दुनिया में पब्लिक हेल्थ इमरजेन्सी घोषित किया गया है अतः इसके लिए समय पर जागरूक होना बहुत जरूरी है। मंकीपॉक्स एक संक्रामक रोग है, जो मंकीपॉक्स के कारण होता है, जिसे हम पॉक्स वायरस भी कहते है जो ऑर्थोपॉक्स वायरस की एक प्रजाति है जो छोटी चेचक का कारण भी बनता है। इस विषाणु जनित रोग को जूनोटिक रोग के रूप में जाना जाता है जिसका अर्थ है कि यह पशुओं के बीच फैलता है। शुरू में यह पशुओं से मनुष्यों में फैलता था अब मनुष्य से मनुष्य में फैलने लगा है। इस विषाणु की खोज डेनमार्क (1958) में शोध के लिए रखे गये बंदरों में हुई थी विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ) के मुताबिक मनुष्यों में मंकीपॉक्स का पहला मामला 1970 में सामने आया था तब कॉन्गो के रहने वाले एक 9 महीने के बच्चे में ये संक्रमण मिला था। 1970 के बाद 11 अफ्रीकी देशों में मनुष्यों के मंकीपॉक्स से संक्रमित होने के मामले सामने आये हैं।

यह विषाणु ज्यादातर मध्य और पश्चिमी अफ्रीका के उष्ण कटिबन्धिय वर्षावन क्षेत्रों में पाया जाता है। अफ्रीका के बाहर आमतौर पर यह वायरस उन यात्रियों से जुड़े होते है जो उस क्षेत्र में आते–जाते हैं और संक्रमण फैलाते हैं। यह रोग तब फैलता है जब कोई व्यक्ति किसी ऐसे पशु या व्यक्ति के सम्पर्क में आता है जिसमें यह विषाणु होता हैं। संक्रमित व्यक्ति के खासने या छींकने से निकली बुंदो को श्वांस के माध्यम से अन्दर लेना या बूंद का ऑख, नाक या मुंह में चले जाने से यह रोग हो सकता है। संक्रमित शारीरिक तरल पदार्थ, चकत्ते, घाव, पपड़ी या छाले के साथ शारीरिक सम्पर्क होने पर भी यह रोग हो सकता है। यह रोग संक्रमित पशु के खरोंच या काटने, संक्रमित पशु मांस या अन्य उत्पाद तैयार करना या खाना या संक्रमित पशु के रक्त शारीरिक द्रव्य या घावों के साथ सीधा सम्पर्क में आने से फैलता है। यह रोग गर्भावस्था के दौरान प्लेसेंटा (जर) के माध्यम से अजन्में नवजात में भी फैल सकता है।

लक्षणः

- वायरस के सम्पर्क में आने के 5–21 दिन बाद लक्षण दिखाई देते हैं।
- शुरूआत में फ्लू जैसे लक्षण दिखाई देना
- बुखार, सिरदर्द, जोड़ों का दर्द, पीठ दर्द, मांगसपेशियों में दर्द, ठंड लगना।
- लिम्फ नोड्स में सूजन आना।
- आमतौर पर शरीर पर दाने बुखार और अन्य गैर–दाने लक्षणों के 1–5 दिन में विकसित होते हैं।
- इसमें विशिष्ट प्रकार के दाने बनते हैं जो कभी–कभी बड़े चिकन पॉक्स या फफोले के समान दिखते हैं।
- यह दाने शुरूआत में सपाट लाल धब्बे जैसे होते है फिर यह पीले रंग के तरल पदार्थ से भरे घाव में बदल जाते है बाद में यह सूख के पपड़ीदार होकर गिर जाते है।
- यह दाने शरीर के किसी भी हिस्से पर हो सकते है, जैसे की मुंह, हाथ, पैर, गुदा के पास पेरिनियल स्थान पर।

निदानः

- इसे चिकनपॉक्स, खसरा, जीवाणु त्वचा संक्रमण, खुजली, दाद, दवा सम्बन्धित एलर्जी से अलग पहचान करना महत्वपूर्ण है।
- इसमें त्वचा के घाव से नमूना लेकर पॉलीमरेज चेन रिएक्शन (पीसीआर) परीक्षण कराने पर वायरस का पता लगाया जा सकता है।

उपचार

- हल्के संक्रमण में विशिष्ट उपचार की आवश्यकता नही होती।
- जटिल लक्षणों में दानों की देखभाल आवश्यक होती है इसमें दर्द निवारक दवाओं एवं एंटीबायोटिक दवाओं को दिया जा सकता है।
- यदि गंभीर मंकीपॉक्स है तो एंटीवायरल दवा या अन्य दवायें लक्षणों के आधार पर दे सकते हैं।
- गंभीर लक्षणों वाले लोगों के लिए चेचक से बचाव के लिए विकसित एंटीवायरल दवाओं और इम्यूनग्लोब्यूलिन जैसी चिकित्सा का उपयोग मंकीपॉक्स संक्रमण के इलाज के लिए किया जा सकता है।

टीकाकरणः

- एमपॉक्स वैक्सीन (टीकाकरण) लगवाने से संक्रमण रोकने में मदद मिल सकती है।
- चेचक की रोकथाम के लिए दो टीकों का उपयोग मंकीपॉक्स संक्रमण की रोकथाम के लिए भी किया जा सकता है।

रोकथामः

- मंकीपॉक्स से पीड़ित व्यक्ति को अपने चिकित्सक के मार्गदर्शन के अनुसार घर पर या जरूरत पड़ने पर अस्पताल में उपचार के दौरान अलग ही रहना चाहिए।
- इसमें छालों को फोड़ना या घावों को खरोचना नहीं चाहिए इससे ये शरीर के अन्य भागों में भी फैल सकते हैं और घावों में संक्रमण हो सकता है।
- हाथो को हमेशा साबुन और पानी या हैंड सैनीटाइजर से धोना चाहिए, विशेष रूप से घावों को छूने से पहले या बाद में।
- जब तक संक्रमण हो तब तक मास्क पहनना तथा अन्य लोगों के आसपास रहते समय घावों को ढककर रखना चाहिए।
- बहुत ज्यादा मात्रा में तरल पदार्थ पीना चाहिए तथा आराम करना चाहिए।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

परजीवी विरोधी प्रतिरोध : एक नई चुनौती

परजीवी जनित रोग (पैरासाइटिक डिसीज) दुनिया भर में पशु स्वास्थ्य के लिए एक गंभीर समस्या है। इन रोगों के नियंत्रण और उपचार के लिए एंटीपैरासिटिक दवाओं का उपयोग महत्वपूर्ण है, लेकिन हाल ही में परजीवी विरोधी प्रतिरोध (एंटीपैरासिटिक रेसिस्टेंस) एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा है, जो इन रोगों के प्रबंधन को कठिन बना रहा है। इसे नियंत्रित करने के लिए समर्पित प्रयासों, सही दवाओं को उपयोग, और नवाचार की आवश्यकता है। अगर इस पर समय रहते प्रभावी ढंग से ध्यान नहीं दिया गया तो यह स्थिति और गंभीर हो सकती है, जिससे रोग नियंत्रण और उपचार में बड़ी कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

परजीवी विरोधी प्रतिरोध क्या है?

परजीवी विरोधी प्रतिरोध तब उत्पन्न होता है जब परजीवी, जो कि एंटीपैरासिटिक दवाओं द्वारा नष्ट होने चाहिए, दवाओं के प्रति प्रतिरोधक बन जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि दवाएं अपनी प्रभावशीलता खो देती हैं, जिससे रोगों का इलाज करना अधिक मुश्किल हो जाता है।

परजीवी विरोधी प्रतिरोध के मुख्य कारण :–

दवाओं का अनियंत्रिक प्रयोग (ओवरयूज) :–

एंटीपैरासिटिक दवाओं का अत्यधिक और अनियंत्रित उपयोग परजीवियों में प्रतिरोधकता बढ़ाने का एक प्रमुख कारण है।

दवाओं का गलत सेवन :–

पशुओं में दवाओं का सही तरीके से सेवन न करना, जैसे कि पूरा कोर्स न करना भी प्रतिरोध को बढ़ावा देता है।

पर्यावरणीय और जैविक कारक :–

परजीवियों की प्राकृतिक चयन प्रक्रिया और उनके जीन में होने वाले बदलाव भी प्रतिरोधकता का कारण बन सकते हैं।

परजीवी विरोधी प्रतिरोध के विकास को कैसे रोका जाए!

क्या करना चाहिए :–

1. केवल पशु चिकित्सक की सलाह पर ही पशुओं को एंटीपैरासिटिक दवा दें।
2. पशुओं में उचित कृमिनाशक शेडयूल का पालन करें।
3. पशुचिकित्सक द्वारा निर्देशित दवाओं की खुराक को पूरा करें।
4. दवाओं की उचित डोज की गणना करके ही दवा दे, दवा कम या अधिक मात्रा में ना दें।
5. पशुओं का नीम–हकीमों से इलाज ना करवायें।
6. दवा का इस्तेमाल करने से पहले ड्रग लेबल पर दिए गए निर्देशों को पढ़ें।
7. एक ही पशु में परजीवी रोधी दवाओं को सालाना बदलें।
8. परजीवी विरोधी प्रतिरोधकता पर शैक्षिक और जागरूकता कार्यक्रमों को बढ़ावा दें।
9. अपने फार्म में कृमि नियंत्रण का पुरा रिकॉर्ड रखें।
10. पशुओं में परजीवी नियत्रंण के एथनोवेटरनरी दवाओं का प्रयोग करें।

क्या नहीं करना चाहिए:–

1. दोस्तों, परिवार के सदस्यों और पड़ोसियों द्वारा सुझाई गई परजीवी विरोधी दवाओं का सेवन न करें।
2. बार–बार समान दवाओं का अधिक सेवन न करें।
3. पशुओं को स्वंय से दवाएं ना दें।
4. पशुओं में सामूहिक कृमिनाशन न करें।
5. अपने स्वयं के अनुभव के आधार पर स्टोर से दवाएं न खरीदें और ना ही पशु को देवें।

डॉ. मैना कुमारी, डॉ.मनीष कुमार
पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़

सफलता की कहानी

रामकुमार ने पशुपालन से हासिल की जीत

सूरतगढ़ क्षेत्र के गांव 1 के.एस.आर. निवासी रामकुमार ने आर्थिक सुधार के लिए पशुपालन का विकल्प चुना और प्रारंभ में केवल 2 गायों के साथ पशुपालन व्यवसाय की शुरुआत की लेकिन प्रारंभिक कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने हार मानने की बजाय ज्ञान प्राप्त करने का मार्ग चुना। पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ द्वारा आयोजित एक दिवसीय वैज्ञानिक डेयरी फार्मिंग प्रबंधन प्रशिक्षण में भाग लेकर और वहां के वैज्ञानिकों के संपर्क में आने के बाद रामकुमार ने अपने पशुपालन व्यवसाय को नए सिरे से व्यवस्थित किया। उन्होंने पशु नस्ल सुधार, पशु आहार प्रबंधन, टीकाकरण, कृमिनाशक दवाओं जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर जानकारी प्राप्त की जो उनके व्यवसाय को सफल बनाने में सहायक साबित हुए। वर्तमान में उनके पास कुल 16 गायें, 4 भैंस, और 6 बच्छीयां हैं, जिनसे वे प्रतिदिन लगभग 1.5 क्विंटल दूध का उत्पादन कर रहे हैं। इस दूध को वे सूरतगढ़ के नजदीक आर्मी और एयरफोर्स में 60 रुपये प्रति लीटर की दर पर बेच रहे हैं। इस व्यवसाय से वे सालाना लगभग 7–8 लाख की आमदनी प्राप्त कर रहे है। उनकी इस सफलता के बाद उनका लक्ष्य एक सुव्यवस्थित बड़ा फार्म बनाने का है। इसके साथ ही वे अपने गांव के अन्य लोगों को भी पशु विज्ञान केन्द्र से जुड़ने के लिए प्रेरित कर रहे हैं, ताकि वे भी पशु विज्ञान केन्द्र द्वारा समय–समय पर आयोजित किये जाने वाले प्रशिक्षणों और उनके मार्गदर्शन का लाभ उठा सकें। रामकुमार की इस यात्रा से यह भी स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से आर्थिक सुधार संभव है, उनकी मेहनत और सीखने की इच्छा ने उन्हें सफलता की ऊँचाइयों तक पहुंचाया है साथ ही उनकी यह कहानी अन्य ग्रामीण उद्यमियों के लिए एक प्रेरणा का स्त्रोत हो सकती है।

सम्पर्कः रामकुमार
गांव–1 के.एस.आर., सूरतगढ़ (मो. 9928724005)

निदेशक की कलम से...

बर्डफ्लु की रोकथाम हेतु उचित बायोसिक्योरिटी सिद्धांतों को अपनायें पशुपालक

मुर्गीपालन व्यवसाय ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में किया जाने वाला एक महत्वपूर्ण व्यवसाय है जिसे अपनाकर पशुपालक अपनी आय में बढोतरी कर रहे हैं। मुर्गीपालन व्यवसाय को बर्डफ्लु से अत्यधिक नुकसान होता है। अभी हाल ही में उड़ीसा के पूरी जिले में बर्डफ्लु रिपोर्ट हुई है, जहां पर बीमारी को फैलने से रोकने के लिए लगभग 20,000 मूर्गियों को मारा गया है। बर्डफ्लु एक अत्यधिक सक्रांमक वायरल संक्रमण है, जो मुख्य रूप से पक्षियों को प्रभावित करता है तथा मनुष्यों व अन्य जानवरों को भी प्रभावित कर सकता है तथा यह रोग बहुत तेजी से फैलता है। यह रोग पूरे पौल्ट्री फार्म को तबाह कर देता है तथा रोगग्रस्त मुर्गिया एक–एक कर मरने लगती है। हर साल लाखों मुर्गियों को मार दिया जाता है, ताकि बर्डफ्लु का संक्रमण फैल ना पायें। यह बीमारी एवियन इन्फ्लूऐंजा नामक वायरस से होती है। बर्डफ्लु का संक्रमण चिकन, टर्की, गीस, बत्तख, मोर आदि पक्षियों में होता है तथा इनसे यह रोग मनुष्यों में भी हो सकता है। इस रोग से संक्रमित पक्षियों के पंख झड़ने लग जाते है, बुखार होने लगता है। पक्षी की गर्दन, ऑख व सिर के आसपास सूजन आ जाती है। कलगी में नीलापन आ जाता है तथा मुर्गी अचानक मरने लग जाती है। यह रोग मुर्गियों से मनुष्यों में भी फैल सकता है। हालांकि ऐसे कम ही मामले सामने आये हैं इसलिए यह बीमारी न केवल मुर्गियों के लिए घातक है बल्कि मनुष्यों के लिए भी जानलेवा हो सकती है। अतः पशुपालक व मुर्गीपालक भाईयों को मुर्गियों को बर्डफ्लु से बचाने के लिए दो प्रजातियों के पक्षियों को एक बाड़े में न रखें, अपने फार्म पर बाहरी व्यक्ति तथा अन्य पक्षियों के प्रवेश को वर्जित रखना चाहिए। नये चूजों व मुर्गियों को फार्म में प्रवेश से पहले फार्म पर आवश्यक दवाओं का छिड़काव कर संक्रमण मुक्त करें तथा नये चूजों व मुर्गियों को कम से कम 30 दिनों तक निगरानी में रखने के बाद ही स्वस्थ चूजों के साथ रखना चाहिए तथा अपने पौल्ट्री फार्म की नियमित साफ–सफाई पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए, जब फार्म के पक्षी/मुर्गियों में बर्डफ्लु के लक्षण दिखायी देने लगे तो अन्य स्वस्थ पक्षियों से अलग कर तुरन्त प्रशासन और निकटतम पशुचिकित्सालय को अवगत करावें ताकि बर्डफ्लु के खतरे से निपटने के लिए आवश्यक कदम उठाये जा सके। इस प्रकार मुर्गीपालक भाई समय पर उचित कदम उठाकर अपने फार्म की मुर्गियों में बर्डफ्लु फैलने से बचा सकते हैं।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

''धीणे री बात्यां''

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया

संपादक

डॉ. दीपिका धूड़िया

डॉ. मनोहर सैन

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

0151-2200505

email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया